

## क्षमा भाव

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,

पूर्व कुलपति सिंधानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

क्षमा भाव भारतीय संस्कृति का महत्वपूर्ण शब्द है। क्षमा वीरस्य भूषणम् अर्थात् क्षमा को वीरों का आभूषण कहा गया है। जो कर्मवीर होता है वही धर्मवीर भी होता है। क्षमा में से धर्म को और धर्म में से क्षमा को निकाल दिया जाये तो वह बेकार हो जाता है। इन्सान गलती का पुतला है गलती को सुधारने के लिए यह आवश्यक है कि उसका शुद्धिकरण किया जाये। इस संसार में हर चीज का उपचार है। गलती का भी उपचार है। यदि समय रहते उसका उपचार कर दिया जाय तो वह ठीक हो जाती है। गलती का प्रतिकार प्रायश्चित है। प्रायश्चित से पाप नष्ट हो जाते हैं। जिस व्यक्ति के साथ गलती किया है उससे क्षमा मांगना चाहिए। व्यावहारिक जीवन में जाने-अनजाने अनेक गलतियां हो जाती हैं। जैसे हम ट्रेन में यात्रा कर रहे हैं, यात्रा करते समय सामान भी रहता है, सामान ले जाते वक्त यदि किसी को धक्का लग गया और वह गिर गया है तो उससे क्षमा मांगनी चाहिए। क्षमा मांगने से वह शान्त हो जाता है। यदि क्षमा न मांगे तो लड़ाई-झगड़ा भी शुरू हो सकता है। जीवन के हर क्षेत्र में विनम्रता और क्षमाभाव का प्रदर्शन करना चाहिए। क्षमाभाव से व्यक्ति छोटा नहीं बल्कि उसके बड़पन का पता चलता है। जो गम्भीर प्रकृति का होता है वही क्षमा कर सकता है। कमजोर व्यक्ति क्षमा नहीं कर सकता। वह तत्काल विवाद करने लगता है। क्षमा मांगने से अन्दर के मन की गांठ छूट जाती है। गांठ बांधना बंधन का कारण है। क्षमा मांगने से व्यक्ति हल्का महसूस करता है। आज का युग वैश्वीकरण का युग है। एक जगह घटी हुई घटना दूसरी जगह तत्काल प्रभाव दिखा देती है। यदि घटना के प्रभाव को उसी जगह समाप्त कर दिया जाये तो उसका प्रभाव दूसरी जगह नहीं फैलता। क्षमा लेना ओर क्षमा देना दोनों महत्वपूर्ण हैं, दोनों महान होते हैं। भारतीय संस्कृति अध्यात्मिक प्रधान संस्कृति हैं। इस संस्कृति में सभी उच्च मूल्य समाहित हैं। उसका आचरण हमें जीवन में करना चाहिए। महाभारत के प्रसंग में भगवान श्रीकृष्ण ने शिशुपाल को सौ गलती का क्षमादान दिया था। क्षमाभाव बहुत बड़ा मूल्य है।

क्षमाभाव सहनशीलता दिखलाता है, क्षमाभाव से दृष्टिकोण में रचनात्मकता आती है। अच्छी बात भी यदि बुरी सोच से ग्रहण कर ली जाये तो वह भी नकारात्मक हो जाती है। क्षमाशील व्यक्ति का कोई दुश्मन नहीं होता, सभी उसके मित्र हो जाते हैं। दूसरों के अवगुणों को नहीं बल्कि गुणों को देखना चाहिए।

समता भाव शांति की अवस्था है। कषाय का न रहना समता भाव है। मध्यस्थ भाव रखना समता है। सुख दुःख में समान रहना, एक स्थिति में समता भाव है। गीता में इसे स्थितिप्रज्ञ कहा गया है। प्रियता और अप्रियता में समभाव रखना चाहिए। यह एक उत्तम गुण है। राग-द्वेष में रहना अशांति को जन्म देना है। शांति आत्मा का गुण है। शांति हमें प्रिय है। राग-द्वेष बाहर से आरोपित भाव हैं। सोने से मिट्टी को अलग कर देने पर सोना चमकने लगता है। इसी प्रकार मानव में शांति आ जाने पर उसका चरित्र भी चमकने लगता है। यह अवस्था आत्मा की अपनी स्वाभाविक अवस्था है। कारण और कार्य के अनुसार सृष्टि चलती है। यदि बुरा कर्म किया जाता है तो फल के रूप में भी बुराई ही प्राप्त होती है और यदि अच्छा कार्य किया जाता है तो भलाई प्राप्त होती है। अच्छा और बुरा कर्म करना मानव के अपने अधीन है। समता, सहअस्तित्व, शांति, सहनशीलता अच्छे गुण हैं। सहनशीलता मानव का सबसे बड़ा गुण है। जिस मानव के अंदर यह गुण रहता है वह महान कहलाता है। जो व्यक्ति जितना सहन करके चलता है उसका चरित्र उतना ही ऊंचा होता है। चरित्र वह हीरा है जो टूटकर जुड़ता नहीं। चरित्र निर्माण मानव की स्वाधीन प्रक्रिया है। चरित्र ही ऐसा है जिसे मानव गढ़ सकता है। यह उसके अपने अधिकार का विषय है। किसी व्यक्ति को किसी बुराई का परित्याग करने को कहा जाता है तो अक्सर उत्तर मिलता है कि क्या करूं मैं मानता हूं कि यह कार्य गलत है किंतु मेरी आदत पड़ गई है, आदत छूटना बड़ा कठिन है। कई तो यहां तक कह देते हैं कि मैंने इस आदत को त्यागने का खूब प्रयास किया किन्तु मैं इसे छोड़ नहीं सका। ये सारी बातें जो अक्सर आया करती है, जिन्हें सुनकर मैं हैरान रहता हूं। मैं एक बात पूछता हूं ऐसे व्यक्तियों से कि भाई तुम अपनी आदत को बदल नहीं सकते तो बताओं क्या बदल सकते हो? चांद-सूरज बदल सकते हो या धरती आसमान को बदल सकते हो? क्या अपने एक सफेद बाल को भी काले बाल में बदल सकते हो? वास्तविकता यह है कि

मानव कुदरत के सिद्धान्तों को बदलने में नितांत असमर्थ है। हां एक ही बात व्यक्ति के अपने हाथों में है, और वह है अपने आपको बदलना। यह कैसी विडंबना है कि जो मानव कर सकता है उसके लिए ही कहा करता है कि मैं यह नहीं कर सकता। चरित्र निर्माण के संबंध में पहली आवश्यकता है व्यक्ति अपनी आत्म-शक्ति को पहचाने। अपने आप में एक अनंत शक्ति का स्रोत निरंतर प्रवाहित है, इस ध्रुव सत्य को आत्मसात कर लिया जाए। ध्यान धारणा द्वारा अपने-आपको अंतर पुष्ट करने की एक प्रबल आवश्यकता है। सहनशीलता का अपने आप में अनुभव एक ऐसी जबरदस्त प्रक्रिया है कि वह जीवन के प्रति समस्त दृष्टिकोण को बदल देती है।